सत्यमेव जयते! ध्यानमेव जयते!!

सत्यमेव जयते–यह उपनिषद की एक सूक्ति है।

सत्य की हमेशा जीत और असत्य की हार होती है।

मगर कभी–कभी बादलो के कारण सच्चाई छिप जाती है लेकिन सूरज रूपी सच्चाई तुरन्त प्रकाशित होकर सामने आ जाती है।

सत्य क्या है और असत्य क्या है?

जो नित्य है,वही सत्य है।

जो अनित्य है,वह असत्य है।

फिर नित्य क्या है, और अनित्य क्या है?

आत्मा नित्य है, अनात्मा अनित्य है।

आत्मा ही सच है। आत्मा ही स्वयं प्रकाशमय सूरज है। दिल की कुटिल भावनाएँ ही आत्मा को आच्छादित करदेने वाले बादल हैं।

इतना ही नहीं, 'मैं शरीर हूँ'–यह अज्ञान भावना ही आत्मा के प्रकाश की रुकावट है।

हमें अपने तमोगुण व रजोगुण से बनाए गए अज्ञान के पर्दे को अपनी आत्मा से स्वयं हटाना हैताकि वह प्रकाशित हो सके। इसका एकमात्र रास्ता है–आनापानसति–विपस्सना ध्यान।

झूठ और हार से भरी निराशामय ज़िन्दगी जीना है या सत्य और जीत से भरी आनन्दमयी ज़िन्दगी? इसका निर्णय हमें स्वयं लेना है।

यह निर्णय–

सच या झूठ, जीत या हार, ध्यान या प्रार्थना, अब या बाद में–समयानुसार विश्लेषण करके व्यक्ति को स्वयं ही लेना चाहिए।

इसलिए पिरामिड स्पिरिचुअल सोसायटी इण्डिया का सबके लिए सन्देश है–सत्यमेव जयते। ध्यानमेव जयते।